

ऊर्जा से लबालब गीत और नृत्य

‘मेरा सूरज बादलों के महल में सोया हुआ है
जहां कोई सीढ़ी नहीं, कोई खिड़की नहीं,
और वहां पहुंचने के लिए—
सदियों के हाथों ने जो डंडी बनाई है
वो मेरे पैरों के लिए बहुत संकरी है...’

‘संभोग से समाधि की ओर’ पुस्तक की भूमिका में लिखी अमृत प्रीतम ये पंक्तियां किस तरफ इशारा करती हैं, मैं नहीं जानता। मगर जब ऐसी प्रतिभावान शख्सियत को भी लिखने से पहले अक्षर परीक्षा की स्थिति महसूस हो, तो उसे क्या कहें। अनायास ही 23 मई के अमर उजाला में प्रकाशित उनका अनुभव पढ़ने को मिला। वे लिखती हैं—जब मुझे ओशो के बारे में लिखने के लिए कहा गया, तो मेरी कलम भी मेरी तरह हल्के से मुस्कुरा दी। आहिस्ता से कहने लगी—आप मुझे अक्षर परीक्षा में क्यों डालते हो? क्या अनुभव का अग्नि स्नान काफी नहीं है?’ ओशो को खामोशी का अनुभव बताने वाली अमृता प्रीतम लिखती हैं—‘अंतर का अनुभव सिर्फ एक ही भाषा जानता है—खामोशी की...और खामोशी के कण मेरी कलम से नहीं उतरते। बस इतना ही होता है कि जब भी ओशो की बात करती हूँ, लगता है कि खामोशी की ओर एक संकेत ही हो पाया है, इससे अधिक कुछ नहीं हुआ।’ ‘सुख को बांटने की कला ही प्रेम है,

तुम सुख से लबरेज हो, उस बहाव को तुम नहीं रोक सकते, तुम्हें उसे बांटना ही होगा। तब वहां एक ऐसा काव्य निर्मित होगा, ऐसा सुखद एहसास होगा जो इस लोक से परे मालूम पड़ेगा’—20 मई के दि टाइम्स ऑफ इंडिया में स्वामी कीर्ति की प्रस्तुति में धम्मपद का यह लेख प्रकाशित हुआ। नो योअरसेल्फ—स्वयं को जानो—18 मई के दि आफ्टरनून डिस्पैच एंड

कूरियर में छपे लेख में लिखा है—मनुष्य हमेशा कमी महसूस करता है, क्योंकि वह स्वयं को जाने बिना ही चाहत रखता है। स्वयं को जाने बिना ही कुछ बनना चाहता है।... स्वयं को जानो, वैसे नहीं जैसा कोई और है, बल्कि वैसे जैसा कि तुम स्वयं हो’ इसी दिन राजस्थान पत्रिका ने ‘मृत्यु क्या है’ शीर्षक से ओशो प्रवचन को प्रकाशित किया, जिसमें लिखा है कि जीवन को जो जान लेते हैं, वे ही केवल मृत्यु को जान पाते हैं।

जीवन का रहस्य जिन्हें ज्ञात हो जाता है, उन्हें मृत्यु भी रहस्य नहीं रह जाती है, क्योंकि वह तो उसी सिक्के का दूसरा पहलू है। 18 को ही ‘थिंक दैट ऑल फिनोमिना...’ शीर्षक का प्रवचन टाइम्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली और मुम्बई में प्रकाशित हुआ। इसी समाचार पत्र ने इसी दिन ओशो की ध्यान पद्धति को भी छापा जिसमें आंखों को विश्राम देने की बात समझाई गई है।

‘बुद्ध का धर्म..’ इस प्रवचन को 14 के दिव्य हिमाचल में पढ़ा जा सकता है। इसी दिन राष्ट्रीय सहारा ने ओशो और उनकी माता जी के बीच हुए संवादों को भी प्रस्तुत किया। दैनिक जागरण में क्रांतिबीज की कहानियां नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। 09 मई को प्रकाशित हुई एक कहानी में मनुष्य के विकारों के संबंध में ओशो कहते हैं कि मिट्टी फूल बन जाती है और गंदगी खाद बनकर सुगंध में परिणत होती है। ऐसे ही मनुष्य के विकार हैं। वे शक्तियां हैं जो मनुष्य में पशु जैसे दिखते हैं, वही दिशा परिवर्तित होने पर दिव्यता को उपलब्ध हो जाते हैं।’ 06 के दि टाइम्स ऑफ इंडिया में ‘लिव इन दि हियर एंड नाउ’ शीर्षक से स्वामी कीर्ति की प्रस्तुति छपी है। 04 के राजस्थान पत्रिका ने क्रांतिबीज पुस्तक की कहानी ‘क्या है प्रार्थना’ और ‘रहस्यदर्शी सूफी नसरुद्दीन’ पर मा अमृत साधना की प्रस्तुति को प्रकाशित किया। 03 के डेक्कन हेराल्ड ने ‘वैल्यू ऑफ सचनेस’, 2 को दैनिक जागरण ने ‘अमृत का विश्वास’, विराट वैभव ने ‘किसको मिलेगा भगवान’ और मिलाप ने ‘स्वाद के प्रति सजग’ रहो प्रवचनों को छापा। इसी दिन मुम्बई के आफ्टरनून डिस्पैच ने ‘डॉट फाइट योअरसेल्फ’ भी प्रकाशित किया। 1 के अमर उजाला ने दि बुक ऑफ विज़डम का प्रवचन प्रकाशित किया है, जिसमें



ओशो एक तिब्बती बौद्ध तकनीक का विश्लेषण करते हुए कहते हैं कि सभी घटनाएं जो भी देखी जा सकती हैं, सपना है। सपनों को तिरोहित होते हुए देखो तो तुम पाओगे कि तुम मात्र द्रष्टा हो, अनुभव करने वाले हो।

‘उनका तार्किक चिंतन साधकों को यह बतलाना था कि हमें तर्क से अतर्क की ओर, मन से हृदय की ओर, विचारों से भाव की ओर जाना है...ओशो का चिंतन तर्क से परे, हृदय की अतल गहराइयों में डूबकर ही समझा जा सकता है’—डॉ. शब्बीर दुबे के इन विचारों को 15 मई के नई दुनिया, इंदौर ने प्रकाशित किया।

वैशाली कौन है, यह बताना मुश्किल है। वह सब कुछ है—अस्पताल में काम करने वाली, घर में काम करने वाली, जूस बेचने वाली, डांस बार में परफॉर्म करने वाली और ओशो की शिष्या। और अब एक लेखिका भी। उसने 1200 पन्नों की एक किताब लिखी है, जिसमें अपने जीवन के अनेकों अनुभवों को शब्दों में उतारा है—14 मई कि दि हिन्दू, नई दिल्ली में ‘सरवाइवल स्टोरी’ शीर्षक से छपी इस खबर को विस्तार से पढ़ा जा सकता है। संभोग से समाधि की ओर

पुस्तक पढ़ने के बाद उसके जीवन में क्या और कैसा परिवर्तन आया, इसका खुलासा वैशाली ने अपने इस इंटरव्यू में और अपनी किताब में किया है। वैशाली कहती हैं कि मैंने अपनी इस किताब में सब कुछ लिखा है, जिसे पढ़ने के बाद स्त्री के संबंध में बहुत से रहस्यों को आप जान सकेंगे।

‘वहां कोई आंसू नहीं था, सिर्फ मुस्कानें थीं, कोई मौन नहीं था बल्कि ऊर्जा से लबालब गीत और नृत्य थे।’ ऐसा लिखा है 3 मई के दि टाइम्स ऑफ इंडिया, चंडीगढ़ में। अवसर था स्वामी नारायण सत्यार्थी की अंतिम यात्रा का। ओशो कहते हैं, मृत्यु भी उत्सवपूर्ण ढंग से मनायी

जानी चाहिए, जैसा कि जीवन है। जाने वाले को अहोभाव और उत्सवपूर्ण विदाई दी जानी चाहिए। ओशो के उत्सवपूर्ण जीवन जीने की देशना को मानने वाले स्वामी नारायण सत्यार्थी ने जब देहत्याग किया तो उनकी देह को भी उत्सवपूर्ण विदाई दी गई। गृहनदिनी, महिलाओं की मासिक पत्रिका नियमित रूप से ओशो के प्रवचनों से चुने हुए अंशों को प्रकाशित करती है तथा इन लेखों की ओशो के चित्रों के साथ साज-सज्जा सराहनीय है।

जून अंक में ‘अनहद में बिसराम’ पुस्तक की समीक्षा एक उद्धरण के साथ प्रकाशित हुई है—ओशो एक नयी ताजी हवा हैं ध्यान की, प्रेम की, धार्मिकता की। इस ताजी हवा से बंद कमरों और अंधकूपों में बिसराम करने वालों को बड़ी भारी अड़चन होती है। ओशो कहते हैं : ‘ओशो मेरे साथ एक धर्म की पताका फहराने वालों को ही नहीं, सभी धर्मों की पताका फहराने वालों

को अड़चन होगी। क्योंकि मेरा किसी धर्म से कोई लगाव नहीं, धार्मिकता से प्रेम है।’

‘ध्यान मुझे अधिक एकाग्र होने में मदद करता है। पिछली बार मैं यहां आई, क्योंकि मेरे पिताजी मुझे यहां लाना चाहते थे, मगर इस बार मैं खुद इस कैम्प के शुरु होने का इंतजार कर रही हूँ’—15 वर्षीय मेघा सूरी के इस अनुभव को एशियन एज ने 24 मई को प्रकाशित किया। अवसर था ओशोधाम, नई दिल्ली में आयोजित चिल्ड्रन्स कैम्प का। 10 वीं कक्षा की छात्रा सारिका वर्मा ने कहा कि ध्यान स्वयं से संवाद का और स्वयं को जानने का एक माध्यम है। वहीं 12 वीं कक्षा के छात्र प्रणय गर्ग ने भी अपने अनुभवों को ज़ाहिर करते हुए कहा कि ध्यान के बाद मैंने अपने स्वभाव में काफी परिवर्तन महसूस किया है, अब मैं स्वयं को अधिक शांत अनुभव करता हूँ। ओशोधाम में समय-समय पर बच्चों और अभिभावकों के ध्यान शिविर आयोजित होते हैं। ओशो वर्ल्ड पत्रिका, ओशो वर्ल्ड न्यूज़ और ओशोवर्ल्ड डॉट कॉम से आगामी ध्यान शिविरों की सूचना प्राप्त की जा सकती है।

— स्वामी प्रेम अभिनंदन

